

শ্রীঃ  
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ  
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।  
বেদান্তাচার্যরর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি ॥

শ্রী মেল্পপত্তূর্ নারায়ণভট্টতিরি ঝিরচিতম্  
॥শ্রীমন্নারায়ণীয়ম্ ॥

দশক - ৪৪

*This document\* has been prepared by*  
**Sunder Kidambi**  
*with the blessings of*  
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্  
**His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam**

---

\*This was typeset using Bengali for T<sub>E</sub>X.

श्रीः  
श्रीमते कृष्णाय परब्रह्मणे नमः  
श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ श्रीमन्नारायणीयम् ॥

दशक - ४४

नामकरणवर्णनम्

गूढं बसुदेवगिरा  
कतुं ते निष्क्रियस्य संस्कारान्।  
हृदगतहोरातञ्चो  
गर्गमुनिस्तुवदगृहं विभो गतवान् ॥ १ ॥

नन्दोथ नन्दिताम्ना  
बुद्धिष्ठं मानयन्नमुं यमिनाम्।  
मन्दस्मितर्द्रमूचे  
व्रतसंस्कारान् विधातुमुतसुकधीः ॥ २ ॥

यदुवशाचार्यत्वात्  
सुनिभृतमिदमार्यं कायमिति कथयन्।  
गर्गो निर्गतपुलक-  
श्चक्रे तव साग्रजस्य नामानि ॥ ३ ॥

कथमस्य नाम कुर्ये  
सहस्रनाम्नो ह्यनन्तनाम्नो वा।  
इति नूनं गर्गमुनि-  
श्चक्रे तव नाम नाम रहसि विभो ॥ ४ ॥

कृषिधातुगकाराभ्यां  
सत्तानन्दात्प्रतां किलाभिलपत्।  
जगदघकर्षित्वं वा  
कथयदृषिः कृष्णनाम ते ब्यतनोत् ॥ ५ ॥

অন্যাংশ্চ নামভেদান  
 ব্যাকুর্ভন্নগ্রজে চ রামাদীন্।  
 অতিমানুষানুভারং  
 ন্যগদভ্রামপ্রকাশয়ন্ পিত্রে ॥ ৬ ॥

স্নিহ্যতি যস্তর পুত্রে  
 মুহ্যতি স ন মাষিকৈঃ পুনঃ শোকৈঃ।  
 দুহ্যতি যসস তু নশ্যে-  
 দিত্যরদত্ তে মহত্বমৃষিরযঃ ॥ ৭ ॥

জেষ্যতি বহুতরদৈত্যান  
 নেষ্যতি নিজবন্ধুলোকমমলপদম্।  
 শ্রোষ্যতি সুরিমলকীর্তী-  
 রস্যেতি ভরদ্বিভূতিমৃষিরুচে ॥ ৮ ॥

অমুনৈর সর্বদুর্গং  
 তরিতাস্থ কৃতাস্থমত্র তিষ্ঠধরম্।  
 হরিরেবেত্যনভিলপ-  
 ন্নিত্যাদি স্বামরণ্যত্ স মুনিঃ ॥ ৯ ॥

গর্গেথ নিগর্গতেস্মিন  
 নন্দিতনন্দাদিনন্দ্যমানস্তরম্।  
 মদগদমুদগতকরণো  
 নিগর্ময শ্রীমরুতপুরাধীশ ॥ ১০ ॥

\*\*\*\*\*